श्री कलराज मिश्र

माननीय राज्यपाल एवं कुलाधिपति,
राजस्थान का उद्‌बोधन

तकनीकी विश्वविद्यालय एवं इंडियन ग्रीन बिल्डिंग काउंसिल
के संयुक्त तत्वाधान मैं विश्व पर्यावरण दिवस पर वेबिनार

ग्रीन बिल्डिंग के माध्यम से सतत विकास

दिनांक 05 जून, 2020 **समय दोपहर : 12.00 बजे**

स्थान : राजभवन, जयपुर

राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय एवं इंडियन ग्रीन बिल्डिंग काउंसिल के संयुक्त तत्वाधान मैं आयोजित की जा रही वेबिनार द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस मनाने पर मैं बधाई देता हूं।

पर्यावरण की चिंता हम सभी को है, लोगों की जागरूकता कैसे बढ़ा सकते हैं, जन–जन से जुड़ा यह विषय आमजन के मानस पटल पर अंकित हो सके एवं लोग संवेदनशील बन सके, हमें प्रयास करना है।

पर्यावरण को मनुष्यों द्वारा केवल स्वयं के अस्तित्व से जोड़कर देखा जाता है। मैं मानता हूं कि मानवता के अस्तित्व के साथ सभी पेड़ पौधों और जीव–जंतुओं को भी धरती पर रहने का उतना ही अधिकार है। यही सहअस्तित्व हमारे पौराणिक ग्रंथों और वैदिक संस्कृति का सार भी है। हमारे लिए पीपल भी पूजनीय है, तो भगवान गणेश की सवारी मूषक भी। हमारे ऋषि–मुनियों ने सह अस्तित्व के सिद्धांत को जनमानस को समझाने के लिए प्रकृति को पूजनीय बना दिया। शायद यही तरीका सीधा सरल लगा होगा।

वर्तमान वर्ष 2020 के विश्व पर्यावरण दिवस की मुख्य अवधारणा जैव विविधता एवं उसका संरक्षण है। भारत देश की मुख्य शक्ति युवा जनसंख्या है। वही हमारी कमजोरी भी है। यदि युवा जनसंख्या की आकांक्षाएं पूर्ण करनी है, तो उन्हें विकास के पथ पर आगे बढ़ाना होगा। उनके लिए जल, मकान, अच्छे पर्यावरण और रोजगार का सृजन करना होगा। परंतु ऐसा करने के दौरान प्रकृति से संतुलन बनाए रखना होगा। जब कभी भी प्रकृति का संतुलन बिगड़ता है, प्रकृति अपने दम पर सुधार का प्रयत्न करती है। इसलिए हमें कभी–कभी प्रकृति का रौद्र रूप भी दिखाई पड़ता है।

प्रकृति से सामंजस्य बिठाते हुए विकास की राह पर आगे बढ़ना आज के समय में एक चुनौती है। अधिक जनसंख्या के लिए अधिक जल की आवश्यकता है। हम ने भूजल के दोहन से जल की कमी को पूर्ण करने की कोशिश की। अब इसी भूजल के गिरते हुए स्तर को सुधारने की आवश्यकता है। इसका सीधा सरल उपाय वर्षा जल को एकत्रित करके भूजल के स्तर को सुधारना होगा।

इसी प्रकार निवास के लिए शहरों में भूमि लगातार कम पड़ रही है, तो कृषि भूमि का अधिग्रहण करना पड़ रहा है। सीमित दायरे में कृषि भूमि के रूपांतरण को कम किया जा सकता है। इससे भविष्य में खाने की समस्या से जूझने में सहायता मिल सकती है। निश्चित ही यह एक महत्वपूर्ण कदम है, जिसे अपनाये जाने की आवश्यकता है।

इसी क्रम में आगे बढ़ते हुए, मैं यह भी कहना चाहूंगा कि बनने वाले सभी भवन इस प्रकार बनाए जाएं कि ऊर्जा खपत न्यूनतम हो, ऊर्जा दक्षता अधिकतम हो। इसी प्रकार विकास के सोपान को सीधे जनता तक पहुंचाया जा सकता है।

सतत विकास के लिए ऊर्जा के गैर पारंपरिक स्रोतों का उपयोग भी आज की महती आवश्यकता है। सौर ऊर्जा में भारत एवं प्रदेश के बढ़ते कदम ऊर्जा के क्षेत्र में हमें आत्मनिर्भर बना रहे हैं। गैर पारंपरिक स्रोतों से ऊर्जा के उपयोग से ग्रामीण क्षेत्र में ऊर्जा की उपलब्धता सुनिश्चित की जा सकती है। इसी तरह जहां भी संभव हो पवन ऊर्जा का भी उपयोग किया जा सकता है।

यातायात के क्षेत्र में भी नवाचार की आवश्यकता है। तेल क्षेत्र में हमें अत्यधिक आयात करना होता है, जिससे विदेशी मुद्रा का नुकसान होता है। यातायात के क्षेत्र में नवाचार करने से तेल के आयात को कम किया जा सकता है। इससे आर्थिक लाभ तो होगा ही, वायु प्रदूषण पर भी अंकुश लगाया जा सकेगा। हमें शुद्ध वायु मिलेगी जो जीवनदायिनी है।

अब से 50 वर्ष पूर्व प्लास्टिक, एक वरदान के रूप में अवतरित हुआ था। प्लास्टिक का बिना सोचे किये गये उपयोग ने विकराल समस्या का रूप ले लिया है। धरती, जल एवं वायु सभी प्लास्टिक के दुरुपयोग से कराह रहे हैं। प्लास्टिक के कारण होने वाले प्रदूषण को रोकने का हर हाल में प्रयास करना ही होगा। प्रदूषण के अनेक पहलुओं में से एक ठोस कचरा प्रबंधन भी है।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के आह्वान से स्वच्छ भारत मिशन लगातार आगे बढ़ रहा है। प्रत्येक शहर में ठोस कचरे के संग्रहण एवं निस्तारण के लिए प्रयास जारी हैं। मैं वैज्ञानिकों, अभियंताओं एवं प्रबुद्ध जनों से आह्वान करना चाहता हूं कि कुछ क्रांतिकारी सुझावों को सरकार एवं जनता के सामने रखें।

ठोस कचरा प्रबंधन एक मिशन के रूप में लागू करके जनता को स्वस्थ जीवन देने की दिशा में सार्थक पहल करने में उल्लेखनीय भूमिका निभाए। आज के विश्व में बायो वेस्ट, न्यूक्लियर वेस्ट एवं ई वेस्ट का निस्तारण अलग तरह की समस्याएं उत्पन्न कर रहे हैं। इनके समाधान के लिए भी वैज्ञानिकों को निरंतर प्रयास करना होगा। बढ़ता हुआ ध्वनि प्रदूषण भी आज के जीवन की एक बड़ी समस्या है। कोलाहल से विभिन्न प्रकार की स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां उत्पन्न हो रही है। शांतिपूर्ण जीवन के लिए ध्वनि प्रदूषण को नियंत्रित करना अत्यंत आवश्यक होता जा रहा है।

मैं एक अन्य खतरे की और आपका ध्यान आकर्षित करना चाहूंगा, वह है रासायनिक प्रदूषण। खेतों में बढ़ते रासायनिक पदार्थों के उपयोग से कैंसर जैसी खतरनाक बीमारियों के होने से अब हमें पुनः अपने मूल की ओर लौटने की आवश्यकता है। इसके लिए हमें ऑर्गेनिक खेती को बढ़ावा देना होगा तथा संसाधनों के समुचित प्रयोग से रासायनिक खेती के कारण होने वाले प्रदूषण को कम करना होगा।

कोविड–19 महामारी मे हमने देखा है कि बड़ी संख्या में कामगारों को दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। इसका मुख्य कारण ग्रामीण भारत में रोजगारोन्मुखी व्यवस्थाओं का अभाव है। हमारे बहुत से मजदूर और कामगार बड़े शहरों में प्रदूषण में रहने को मजबूर हो जाते हैं। इस समस्या के समाधान के लिए प्रत्येक गांव को एक इकाई मानते हुए आत्मनिर्भर बनाना विकास का संशोधित मॉडल हो सकता है।

अपनी जमीन से जुड़े रहकर गांव में ही सभी का विकास हो सके, ऐसा प्रयास किया जाना चाहिए। अपने गांव में अपने लोगों में बैठकर स्वयं विकास की अवधारणा जब मूर्त रूप लेने लगेगी, तो व्यक्ति प्रदूषण के बारे में भी जागरूक होगा तथा सतत विकास की ओर उन्मुख होगा। गांव के संसाधन वही के क्षेत्र के विकास में भागीदार होंगे तथा किसानों एवं मजदूरों को बिना घर छोड़े रोजगार मिलेगा। प्रदूषण से होने वाले दुष्प्रभावों को वह सीधा ही महसूस करेगा तथा स्थानीय स्तर पर समाधान भी खोजेगा।

वर्तमान में चल रही वैश्विक महामारी कोविड–19 यह समझाने के लिए पर्याप्त है कि हमें प्रकृति की शरण में, प्रकृति के नियमों के अनुसार विकास के नए मार्ग तलाशने है।

वैश्विक महामारी में गंगा एवं अन्य नदियों के प्रदूषण में आयी कमी, वायु प्रदूषण में कमी एवं ओजोन परत का ठीक हो जाना, इस बात का द्योतक है कि मानव हस्तक्षेप के न्यून होते ही प्रकृति स्वयं को पुनःस्थापित कर सकती है।

आइए शपथ लें की प्रकृति को उद्वेलित किए बिना मनुष्य एवं जगत को लेकर आगे बढ़ने की भारतीय परंपरा को अपनाएंगे तथा विश्व कल्याण के लिए सह अस्तित्व की स्थापित अवधारणा को पुनर्जीवित करेंगे ।

मैं पुनः एक बार राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय इंडियन ग्रीन बिल्डिंग काउंसिल के तत्वाधान में आयोजित वेबिनार के सफल होने की शुभकामना करता हूं तथा आज के कार्यक्रम में भाग ले रहे लोगों के लाभान्वित होने की आशा रखता हूं।

धन्यवाद।

जयहिन्द।